

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, जोहानिन थियोलॉजी, सत्र 3, जोहानिन शैली, भाग 2

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं जो यूहन्ना धर्मशास्त्र पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 3 है, यूहन्ना शैली, भाग 2।

कृपया मेरे साथ प्रार्थना करें। पिता, आपके वचन के लिए धन्यवाद। यूहन्ना के सुसमाचार के लिए धन्यवाद। इसे हमारे लिए और अधिक व्यापक रूप से खोलें। हमें प्रोत्साहित करें, हमें सुधारें, और हमें अपने अनन्त मार्ग पर ले जाएँ; हम यीशु मसीह के माध्यम से प्रार्थना करते हैं, जो नई वाचा के मध्यस्थ हैं। आमीन।

हम अभी भी अभिविन्यास चरण में हैं, इस बार यूहन्ना की शैली का अध्ययन कर रहे हैं। हमने उनकी विशिष्ट शब्दावली, व्याख्यात्मक या संपादकीय टिप्पणियाँ, गलतफहमियाँ और विडंबनाएँ देखी हैं। अब हम दोहरे अर्थ पर आते हैं। प्रेरित यूहन्ना अक्सर शब्दों के दोहरे अर्थ पर खेलता है।

जिन छात्रों ने यह हेर्मेनेयुटिकल सिद्धांत सीखा है कि किसी भी संदर्भ में किसी शब्द का केवल एक ही अर्थ होता है, वे जॉनीन डबल एनटेंडर, डबल मीनिंग के उदाहरणों को संदेह की दृष्टि से देखते हैं, या उन्हें शायद संयोग कहते हैं। हालाँकि, वे संयोग होने के लिए बहुत अधिक बार होते हैं। जॉन ने निश्चित रूप से नियम तोड़ा है।

एकल अर्थ ही मूल नियम है। अगर कोई एकल अर्थ न हो तो कोई दोहरा अर्थ नहीं होगा, लेकिन उन्होंने इसे अच्छे प्रभाव से तोड़ा है।

आइए हम बाइबल के लेखकों को यह निर्देश देने के दोषी न बनें कि वे क्या कर सकते हैं या क्या नहीं। आइए हम विनम्रतापूर्वक वचन का अध्ययन करें और देखें कि उन्होंने क्या किया। यूहन्ना कहता है कि पहले से ही प्रस्तावना में, वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में रहा, और हमने उसकी महिमा देखी।

शब्द 'निवास' का अर्थ है थोड़े समय के लिए जीना, लेकिन यह एक पुराने परीक्षण से है, जो ग्रीक पुराने नियम के एक शब्द, सेप्टुआजेंट का मूल है, जो शब्द तम्बू से संबंधित है, इसलिए हमारे साथ निवास करता है। अच्छा, आपने कैसे किया? आप क्यों कहते हैं कि यह संभवतः सही है? वैसे, इसका अर्थ निवास करना है, लेकिन यह दोहरा अर्थ है। हम कहते हैं कि यह इन शब्दों के कारण उस तम्बू मूल को भी दर्शाता है।

हमने उसकी महिमा, महिमा और तम्बू को एक साथ चलते देखा है। यूहन्ना कह रहा है कि यीशु का जीवन पृथ्वी पर अपेक्षाकृत रूप से एक छोटी अवधि का था, लेकिन यह भी एक संकेत है कि उसने पुराने नियम के तम्बू को बदल दिया। अध्याय दो में, हम पहले ही देख चुके हैं कि वह पुराने

नियम के मंदिर को अपने शरीर से बदल देता है, जो कि सबसे सच्चा और महान मंदिर है, अगर आप चाहें तो।

अध्याय तीन में, आपको फिर से जन्म लेना होगा। उस शब्द एनोथेन का अर्थ है फिर से, और इसका अर्थ है ऊपर से। और वास्तव में, दोनों ही अर्थ बिल्कुल सही हैं।

आपको दूसरी बार फिर से जन्म लेना होगा, अपने शारीरिक जन्म के बाद आध्यात्मिक जन्म, और आपको फिर से भगवान से जन्म लेना होगा, न कि केवल अपनी माँ से। क्या ये सब संयोग हैं? नहीं। जॉन के लेखन के छात्र ऐसा नहीं सोचते।

वे पाते हैं कि ये जॉन द्वारा पाठक को फिर से आकर्षित करने के लिए दोहरे अर्थ का उपयोग करने के उदाहरण हैं। यही वह इन चीजों के साथ कर रहा है। जॉन के सुसमाचार में प्रसिद्ध कहावत एक नदी के बारे में है जिसमें एक बच्चा इंतजार कर सकता है और एक हाथी तैर सकता है।

हम अब हाथी के पानी में हैं। निश्चित रूप से, इसे पहली बार पढ़ने वाले किसी व्यक्ति को ये चीजें नहीं दिखेंगी। लेकिन यहाँ बात यह है।

वे वहाँ हैं। वे हमारी रुचि जगाने, हमारा ध्यान खींचने के लिए वहाँ हैं। और मैं पहले ही यह कह चुका हूँ।

यूहन्ना 4:10 से 14 में सामरी स्त्री को जीवित जल की बात कही गई है, जिसका मतलब है बहता हुआ पानी। यह जीवित है। यह बहता हुआ है।

यह जीवित है। समझे? और यीशु, बेशक, इसे आध्यात्मिक जल के बारे में बात करने के लिए दोहरे अर्थ के लिए इस्तेमाल करते हैं। यह शाश्वत जीवन का प्रतीक है, जो आत्मा देता है, या शायद यह उस आत्मा का प्रतीक है जो शाश्वत जीवन लाती है।

आप दोनों में से किसी एक के लिए अच्छा तर्क दे सकते हैं। दोनों ही तर्क सही हैं। लेकिन आप जो भी चुनेंगे, उसका निहितार्थ दूसरे पर भी होगा।

नियमित समानांतरता, मैं अब छोटे नंबर पर हूँ, चियास्म। नियमित समानांतरता पैटर्न A, B, B, A, या A, B, C, C, B, A का अनुसरण करती है। आप जितने चाहें उतने सदस्य रख सकते हैं: A, B, C, D, E, E, D, C, B, A, इस तरह। हम आम तौर पर प्रतिबिंब द्वारा थोड़ा उठा हुआ अंक संख्या एक डालते हैं।

तो, ए, बी, बी', ए', इस तरह। यूहन्ना ने अंशों को एक साथ जोड़ने और कुछ विचारों पर जोर देने के लिए चियास्म का उपयोग किया है। तो, प्रस्तावना में, हमारे पास यीशु के लिए ये पदनाम हैं।

उसे तुरंत यीशु नहीं कहा जाता, और यह समझ में आता है क्योंकि, अवतार से पहले के बेटे के रूप में, वह अभी तक यीशु नहीं था। यूसुफ और मरियम दोनों को यीशु का नाम रखने के लिए कहा गया था। तो अवतार से पहले के बेटे के रूप में, शायद उसे बेटा कहा जाता है, है न? नहीं।

मसीह? नहीं। त्रिएकत्व का दूसरा व्यक्ति? नहीं। नहीं, उसे सबसे पहले, पद एक में वचन, दो बार, तीन बार कहा गया है।

और फिर उसे बुलाया जाता है। उसका अगला शीर्षक प्रकाश है। और कम से कम उसे आठवें श्लोक में ऐसा ही कहा गया है। तो, यहाँ बताया गया है कि यह कैसे काम करता है।

यूहन्ना ने पूर्व-अवतार पुत्र को शब्द के रूप में नामित किया, और फिर उसने उसे प्रकाश कहा। और यदि वह नियमित समानता का पालन कर रहा होता, तो हमारे पास यह पैटर्न होता: शब्द, प्रकाश, शब्द के रूप में अवतार, प्रकाश के रूप में अवतार, लेकिन वह उस क्रम को उलट देता है। यह पद एक में शब्द है, यह पद आठ में प्रकाश है, यह दुनिया में आने वाला सच्चा प्रकाश है, नौ में एक बी प्राइम है, और निश्चित रूप से, पद 14 में शब्द देहधारी हुआ।

और फिर, यह हर टिप्पणी द्वारा मान्यता प्राप्त है। बहुत से, बहुत से टिप्पणीकार इसे पहचानते हैं। एक व्यक्ति इस तरह की चीज़ों से निपटने के लिए काफी बड़ा है। इसे देखें। यह कैसे काम करता है? यह शब्द के अवतार, प्रकाश द्वारा दुनिया के प्रकाश को उजागर करने के लिए कार्य करता है।

सच्चा प्रकाश संसार में आ रहा था। पद नौ, शब्द मनुष्य बन गया, मांस और रक्त का एक मनुष्य, 14. यूहन्ना के सुसमाचार में प्रस्तावना में यह एकमात्र ऐसा समय है जब अवतार वास्तव में कहा गया है।

हमें कई बार इसके परिणाम देखने को मिलते हैं। यीशु खुद को पिता द्वारा भेजा गया व्यक्ति कहते हैं, या वे कहते हैं, पिता ने मुझे भेजा है। और उन्होंने कहा, तुम नीचे से हो, मैं ऊपर से हूँ, इस तरह की बातें।

लेकिन यहाँ स्पष्ट रूप से, हमारे पास सच्चा प्रकाश दुनिया में आ रहा है, जो दुनिया को पापी और अज्ञानी के रूप में चित्रित करता है, जो परमेश्वर के ज्ञान से रहित है; सच्चा प्रकाश अंदर आता है और परमेश्वर का ज्ञान लाता है और हर उस व्यक्ति के लिए शुद्धता और पवित्रता लाता है जो विश्वास करता है। इसलिए, यूहन्ना इस चियास्टिक पैटर्न, उलटे समानांतरवाद का उपयोग अपने पाठ के एक भाग को एकीकृत करने और इस मामले में, प्रस्तावना के सबसे महत्वपूर्ण विषय को इंगित करने के लिए करता है, जो कि त्रिएकत्व का दूसरा व्यक्ति एक मानव प्राणी बन रहा है। अध्याय छह, श्लोक 36 से 40 में हमारे पास एक चियास्टिक संरचना है।

मेरे पास इस पर नोट्स नहीं हैं; मैं इसे बस दौड़ते हुए करता हूँ, इसलिए कभी-कभी मुझसे गलतियाँ हो जाती हैं। लेकिन 36, मैंने तुमसे कहा, तुमने मुझे देखा है, और तुम विश्वास नहीं करते। जो कुछ पिता मुझे देता है वह मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा, मैं उसे कभी नहीं निकालूँगा।

क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, बल्कि अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने स्वर्ग से उतरा हूँ। और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उसमें से मैं कुछ न खोऊँ, परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिलाऊँ। क्योंकि पिता की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, अनन्त जीवन पाए, और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिलाऊँगा।

यहाँ एक चिआस्टिक पैटर्न है। देखें कि क्या मैं इसे बाहर निकाल सकता हूँ। श्लोक 36 देखने और विश्वास करने की बात करता है, लेकिन इसे नकार दिया गया है, देखना और विश्वास न करना। श्लोक 40, हर कोई जो बेटे को देखता है और उस पर विश्वास करता है।

तो, यहाँ A और A अभाज्य है। फिर से, हम एक उभरी हुई संख्या एक का उपयोग यह कहने के लिए करते हैं कि A अभाज्य A से मेल खाता है, लेकिन यह अभाज्य है। यह समान नहीं है। कुछ ग्रंथों में, वास्तव में, यह समान हो सकता है, लेकिन यह समान नहीं है; यह बहुत समान है।

हम जॉन की विविधताओं के बारे में बात करेंगे, जो उनकी शैली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यह 36 है। जो कुछ पिता मुझे देता है वह मेरे पास आएगा; जो कोई मेरे पास आता है, मैं उसे कभी बाहर नहीं निकालूँगा।

यह 39 है, यह बी है, यह बी है, यीशु परमेश्वर के लोगों को बचा रहे हैं। बी प्राइम 39 में नीचे है। परमेश्वर की इच्छा है कि वह कुछ भी न खोए, कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उसमें से मैं कुछ भी न खोऊँ, बल्कि अंतिम दिन उसे ऊपर उठाऊँ।

इसलिए, देखकर और विश्वास करके, यीशु ने उन लोगों को रखा जिन्हें पिता ने उसे दिया था, जो लोग उस पर विश्वास करते थे। ए, बी, सी, पिता ने मुझे जो कुछ भी दिया है वह मेरे पास आएगा, जो कोई भी मेरे पास आएगा मैं कभी नहीं, ठीक है हमने वह किया, मैं स्वर्ग से नीचे आया हूँ, 38, अपनी इच्छा पूरी करने के लिए नहीं, बल्कि जिसने मुझे भेजा है उसकी इच्छा पूरी करने के लिए। यह सी है, और यहाँ सी प्राइम है, और यह उसकी इच्छा है जिसने मुझे भेजा है।

सी और सी प्राइम दोनों में यही अवधारणा है। यीशु पिता की इच्छा पूरी करने के लिए आए हैं। और इसलिए, ए, बी, सी, सी प्राइम, बी प्राइम, ए प्राइम।

अध्याय 12 में एक दिलचस्प बात है। मुझे नहीं पता कि मैंने इसे देखा है या नहीं। मैं अपने छात्रों को सालों से यही कहता आया हूँ कि अगर मेरे पास कभी कोई मौलिक विचार आए, तो आपको उस पर बहुत संदेह करना चाहिए।

मैं रचनात्मक होने का दावा नहीं करता, लेकिन यूहन्ना 12:38 से 41 तक का भाग आकर्षक है। मैं इसके बारे में नहीं सोच रहा था, लेकिन यह ठीक है। पिता, अपने नाम की महिमा करें।

नहीं, यह गलत है, यह 28 है। आह, यह वही है जिसके बारे में मैं सोच रहा था, 38। 37 यूहन्ना के सुसमाचार के पूरे पहले भाग, अर्थात् चिन्हों की पूरी पुस्तक की कुंजी है।

यह उस महान उद्देश्य कथन के समान है जैसा कि हमने देखा, और यहाँ यह कहा गया है, हालाँकि उसने उनके सामने बहुत सारे चिन्ह दिखाए थे, यहूदी, दुनिया, वे अभी भी उस पर विश्वास नहीं करते हैं। ताकि भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा कही गई बात पूरी हो सके। और यहाँ वह वचन है, प्रभु, जिसने हमसे जो सुना है उस पर विश्वास किया है और जिसके लिए प्रभु का भुजबल प्रकट हुआ है, यशायाह 53 से एक उद्धरण में।

तो, यशायाह के वचन में, ए, पद 38 में, ए, मैं ए का उपयोग दो अलग-अलग अर्थों में कर रहा हूँ। पद 38, पहला भाग, पद 38, दूसरा भाग बी है, यशायाह 53 का उद्धरण। विश्वास की बात करें, 30, 39, वे बी प्राइम पर विश्वास नहीं कर सकते थे, फिर से, यशायाह ने भविष्यवक्ता को उद्धृत करते हुए कहा, और अब वह यशायाह छह को उद्धृत करता है।

उसने उनकी आँखें अंधी कर दी हैं, और उनके हृदय को कठोर कर दिया है, ताकि वे अपनी आँखों से न देखें, और अपने हृदय से न समझें, और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूँ। ए, बी, बी प्राइम, ए प्राइम, यशायाह, वह भविष्यवक्ता के वचन की बात करता है, अध्याय 53 को उद्धृत करता है। यशायाह 6 इस बार भविष्यवक्ता के वचन और अविश्वास की बात करता है।

यह पाठ को एक साथ खींचने की कोशिश करता है, और यह दिखाता है कि यशायाह 53 वाचा के लोगों के अविश्वास की भविष्यवाणी करता है जब उनका मसीहा आया और खुद को उनके सामने पेश किया। भिन्नता जॉन की शैली की एक और विशेषता है। वास्तव में, भिन्नता जॉन की शैली की इतनी विशेषता है कि आश्चर्यजनक चीजें प्राप्त होती हैं।

आपका क्या मतलब है? लियोन मॉरिस, जिन्होंने जॉन पर एक शानदार टिप्पणी लिखी, एक ठोस इंजील टिप्पणी, लड़का, और मैं लियोन मॉरिस और उनके काम और उनके प्रभाव का सम्मान करता हूँ, उनके खिलाफ बोलने में संकोच करता हूँ, मैं उनके खिलाफ नहीं बोल रहा हूँ, लेकिन कुल मिलाकर, जॉन पर उनकी शानदार टिप्पणी में सुधार किया जा सकता है, इसे कहने का एक अच्छा तरीका है, क्योंकि शायद वह जॉन को एक समकालिक सुसमाचार की तरह बहुत अधिक पढ़ता है, और शायद भगवान के महान व्यक्ति, लियोन मॉरिस, इसे लिखते समय जॉन के विशिष्ट दृष्टिकोण को पर्याप्त रूप से नहीं समझते हैं। किसी भी मामले में, उनकी टिप्पणी अच्छी है, और चौथे सुसमाचार में उनका अध्ययन भी अच्छा है। उस पुस्तक में एक अध्याय का नाम है भिन्नता, जोहानिन शैली की एक विशेषता।

मॉरिस आसानी से जॉन की शब्दावली और शब्द क्रम में लगातार बदलाव को प्रदर्शित करते हैं, और वे निष्कर्ष निकालते हैं कि बदलाव की उम्मीद की जानी चाहिए। जॉन में यह आम बात है। वास्तव में, वे इसका मौलिक निष्कर्ष निकालते हैं।

विविधता जॉन की शैली की इतनी आम विशेषता है कि इसकी उपस्थिति बहुत कम महत्व की है, लेकिन वास्तव में, यह महत्वपूर्ण हो सकता है जब वह अपनी शब्दावली में बदलाव नहीं करता है; यह जोर देने का एक तरीका है। जॉन इसमें बदलाव करता है, इसलिए अध्याय 21 में प्यार और प्यार, अगापे और फिलियो के बीच का अंतर, उसकी विविधता का ही एक हिस्सा है। जॉन 'नहीं'

के लिए दो अलग-अलग शब्दों का इस्तेमाल करता है। वह भेड़ और भेड़ और मेमने कहता है, और वह कहता है, प्यार और प्यार।

ऐसा लगता है कि वह बस बदलाव कर रहा है; वह अपनी शब्दावली बदलता है, और वह चीजों को बदलता है। वास्तव में, मॉरिस, लियोन मॉरिस, जो अब प्रभु के साथ हैं, नए नियम के विद्वानों की एक पुरानी पीढ़ी का हिस्सा थे, जो कभी-कभी शब्दों के अपने अध्ययन में विश्वकोशीय थे, और यहाँ एक उदाहरण है। वह हर बार चौथे सुसमाचार में अध्ययन करता है, कुछ दोहराया जाता है, और वह लगभग हर बार दिखाता है कि शब्दावली के शब्द क्रम में भिन्नता है।

फिर वह तीन बार, चार बार, पाँच बार होने वाली चीजों का अध्ययन करता है। सार, और मैं गिनती भूल गया हूँ, छह या आठ बार जॉन 15 में बने रहने के साथ है। जॉन कहता है कि बने रहो, बने रहो, बने रहो, हर शाखा जो मुझमें बनी रहती है, वह मेरा है, अगर तुम नहीं बने रहते, तो बने रहो, ओह माय वर्ड, और मॉरिस दिखाता है कि जॉन 15 में बने रहने की हर एक घटना विविधता दिखाती है।

इसलिए, उसे सावधान रहना था। क्या जॉन बदलाव करके कोई बात नहीं कर सकता? हाँ, वह कर सकता है, लेकिन आपको सावधान रहना चाहिए। उसका सिर्फ़ एक मुद्दा, सिर्फ़, सिर्फ़ उसके बदलाव का मतलब शायद कुछ भी नहीं है।

तो, अध्याय तीन, मैंने सुना है, आप जानते हैं, धर्मोपदेश और इसी तरह, आप परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकते हैं, आप इसमें प्रवेश नहीं कर सकते हैं, आप इसे देख भी नहीं सकते हैं। मुझे लगता है कि यह शायद जो हज़ीन का ही एक रूप है। और चूँकि फिलियो का इस्तेमाल पिता के बेटे के प्रति प्रेम के लिए किया जाता है, इसलिए कभी-कभी यह कहना गलत है कि फिलियो, अगापाओ से कमतर प्रेम है।

वास्तव में, कभी-कभी यह मनुष्यों के बीच मात्र प्रेम हो सकता है, लेकिन यह जरूरी नहीं है, क्योंकि भिन्नता जॉन की शैली की विशेषता है। मैं अन्य उदाहरण नहीं दिखाने जा रहा हूँ। उनमें से बहुत सारे हैं, बहुत सारे, बहुत सारे, बहुत सारे।

पुराने नियम के विचार। जॉन का सुसमाचार पुराने नियम के संकेतों से भरा पड़ा है। पहले 12 अध्यायों में से प्रत्येक में ऐसे विचार हैं जिनकी जड़ें पुराने नियम की मिट्टी में गहरी हैं।

यह जॉन की शैली का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। कभी-कभी, यह किसी अंश की व्याख्या करने की कुंजी है। उदाहरण के लिए, जॉन 1:17, व्यवस्था मूसा के माध्यम से दी गई थी, अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के माध्यम से आई थी।

मैं प्रगतिशील युगवाद के लिए आभारी हूँ, जिसने, क्षमा करें, पुरानी युगवाद संबंधी समझ में सुधार किया है। धर्मशास्त्र विकसित होते हैं। मेरा अपना वाचा कैल्विनवादी धर्मशास्त्र विकसित होता है।

एंथनी होकेमा ने हमें सिखाया है कि भूमि के वादे से संबंधित कुछ पुराने नियम की अभिव्यक्तियाँ नई पृथ्वी में शाब्दिक रूप से पूरी होनी हैं। उदाहरण के लिए, यह वाचा परंपरा का सुधार है। मैं

निश्चित रूप से पुरानी और यहाँ तक कि नई स्कूल की बाइबलों की तुलना में डिस्पेंसेशनल परंपरा में सुधार के लिए आभारी हूँ।

यूहन्ना 1:17, अगर इसे पुराने नियम की पृष्ठभूमि के विरुद्ध समझा जाए, जहाँ अनुग्रह और सत्य हिब्रू हेसेड को दर्शाते हैं, परमेश्वर का वाचागत दृढ़ प्रेम और विश्वासयोग्यता पुराने नियम में है, उदाहरण के लिए, निर्गमन 34 में परमेश्वर के नाम की महान परिभाषा, और कई भजनों में। यहाँ मैं फिर से हूँ, बस इसे उड़ाने की कोशिश कर रहा हूँ। मुझे डर है कि मेरी उड़ान मुझे ले जाएगी।

आह, यह तो है। यह अच्छा है। 1:17.

हेसेड का हमारे प्रति, परमेश्वर और एम्मेट का, अटल प्रेम महान है, प्रभु की वफादारी हमेशा बनी रहती है। पुराने नियम का यह संयोजन बहुत आम है। और अगर यह पुराने नियम का संयोजन है, तो यह पुराने नियम में मौजूद है।

तो फिर यूहन्ना 1:17 का क्या मतलब है? व्यवस्था मूसा के ज़रिए दी गई थी। अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के ज़रिए आई। अगर यह पुराने नियम की अवधारणा है, तो यह पूर्ण रूप से वियोजन नहीं है, है न? नहीं, ऐसा नहीं है।

इसका अर्थ यह है कि यीशु के व्यक्तित्व में परमेश्वर का अनुग्रह, प्रेम और विश्वासयोग्यता इतनी महान है कि पुराने नियम में परमेश्वर के चरित्र के वे तत्व तुलनात्मक रूप से लगभग नगण्य हैं। यह 2 कुरिन्थियों तीन की तरह है: यीशु मसीह में प्रकट परमेश्वर की महिमा निर्गमन की पुस्तक में मूसा के चेहरे पर परमेश्वर की महिमा को शून्य या बिना महिमा के बना देती है। लेकिन पौलुस ने बस इतना कहा कि महिमा थी।

तो, यह उस तरह का सौदा है। यह एक, यह एक, यह एक, यह अतिशयोक्ति का एक उदाहरण है। जॉन स्पष्ट, पूर्ण शब्दों में बताता है कि यीशु में परमेश्वर के रहस्योद्घाटन की तुलना में वास्तव में क्या तुलना है।

मोज़ेक रहस्योद्घाटन तुलनात्मक रूप से केवल कानूनी है। बिल्कुल। इसलिए, पुराने नियम से कोई अनुग्रह और सत्य नहीं आता है।

पुराने नियम की पृष्ठभूमि की पहचान 51 की कुंजी है। इसे पहली बार पढ़ने वाले कई लोग सोच सकते हैं कि यह किसी तरह की युगांतकारी धारणा है। मैं तुमसे सच कहता हूँ, नतनएल, यीशु ने कहा, तुम स्वर्ग को खुला हुआ और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र पर चढ़ते और उतरते देखोगे।

ओह, यह यीशु के स्वर्गदूतों के साथ फिर से आने की बात नहीं कर रहा है। नहीं, नहीं। पुराने नियम की पृष्ठभूमि उत्पत्ति 28 में याकूब की सीढ़ी है।

याकूब स्वर्ग और पृथ्वी को जोड़ने वाली एक सीढ़ी को ऊपर-नीचे जाते हुए स्वर्गदूतों को देखता है। यहाँ मुद्दा यह है: स्वर्ग और पृथ्वी के बीच का संबंध अब यीशु द्वारा बदल दिया गया है। दूसरे

शब्दों में, स्वर्ग को खुला हुआ देखना, परमेश्वर और स्वर्गदूतों की उपस्थिति, और मनुष्य के पुत्र पर उतरना, वह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच की सीढ़ी है।

दूसरे शब्दों में, यीशु मध्यस्थ है। यह उसके दूसरे आगमन के बारे में बात नहीं कर रहा है, जैसा कि यूहन्ना सिखाता है। बल्कि यह उसके मध्यस्थ होने के बारे में सिखा रहा है।

पुराने नियम के विचार चौथे सुसमाचार को प्रकाशित करते हैं। 11:24. यीशु के यह कहने से पहले कि मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ, मार्था खुद को एक वफादार यहूदी के रूप में दिखाती है।

वह अपने पुराने नियम को समझती है। मैं जानता हूँ कि उसका भाई लाजर, जो मर चुका है, अंतिम दिन पुनरुत्थान में फिर से जी उठेगा। यह भी दानियेल 12 है।

और यशायाह में कुछ अंश जो मुझे अभी समझ नहीं आ रहे हैं, शायद अध्याय 25 और 26। क्या मैंने इसे अपनी बाइबल में लिखा है? यह एक अच्छा विचार होगा, पीटरसन। हाँ।

यशायाह 25, आठ, और 26:19. मैं वहाँ नहीं जा रहा हूँ. यशायाह 25, आठ और 26, 19, साथ ही दानियेल 12 भी.

कई बार, इसे सबसे स्पष्ट प्रमाण माना जाता है, कि धरती की धूल में सोए हुए बहुत से लोग उठ खड़े होंगे, और यह दुष्टों को धर्मी से अलग करता है। मार्था पुराने नियम की पुनरुत्थान की शिक्षा को समझती है। और यीशु, हमेशा की तरह, एक कदम आगे बढ़कर कहते हैं कि वे स्वयं पुनरुत्थान और जीवन हैं।

यूहन्ना 15, एक। मैं सच्ची दाखलता हूँ। बेशक, इसे पुराने नियम की इस धारणा के विरुद्ध पढ़ा जाना चाहिए कि इस्राएल प्रभु की दाखलता या दाख की बारी है।

यशायाह पाँच के बारे में सोचिए। सत्य का अर्थ असत्य के विपरीत नहीं है। बल्कि, यूहन्ना के विचार में, सत्य का अर्थ है पूर्ण, संपूर्ण और नया।

इस्राएल प्रभु की दाखलता के रूप में असफल हो गया। परमेश्वर ने देखा और बुरे फल पाए। यीशु उन लोगों में अच्छे फल पैदा करता है जो वास्तव में विश्वास में उसके साथ जुड़ते हैं।

प्रतीकात्मकता। हमने 2:19 में देखा है, जहाँ यीशु का शरीर मंदिर में है। 6:35.

मैं जीवन की रोटी हूँ। जो कोई मेरे पास आता है, वह कभी भूखा नहीं रहेगा। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी प्यासा नहीं रहेगा।

जॉन, मुझे खेद है, मैं ऐसा क्यों करता हूँ? मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ। द्वैतवाद। जॉन 3:19 से 21।

एक से ज़्यादा बार, मुझे बुरे संदर्भ मिले हैं। मुझे खेद है। यूहन्ना 3:19 से 21.

मैं बस इतना ही कहना चाहता हूँ। चौथे सुसमाचार में द्वैतवाद को नैतिक द्वैतवाद के रूप में समझा जाना चाहिए, न कि एक ऑन्टोलॉजिकल द्वैतवाद के रूप में। बाइबल मनीकेइज़्म के बारे में कुछ नहीं जानती, यह धारणा कि दो शाश्वत सिद्धांत हैं, एक प्रकाश और दूसरा अंधकार।

मैं आपको बताता हूँ कि यह कहाँ परिलक्षित होता है। यह स्टार वार्स फिल्मों में परिलक्षित होता है। बल का एक उज्ज्वल और एक अंधेरा पक्ष है।

नहीं, यह एक अस्तित्ववादी द्वैतवाद है। यानी, ईश्वर, या उस मामले में, देवता, हमेशा के लिए मौजूद हैं। अच्छा और बुरा।

बिल्कुल नहीं। बाइबल एक सत्तामूलक एकत्ववाद सिखाती है। एक सच्चा और जीवित परमेश्वर है, और वह पूरी तरह से अच्छा है।

पाप उसकी दुनिया में घुसपैठिया है। इसके बजाय, जॉन का द्वैतवाद आध्यात्मिक या सत्तामूलक नहीं है। यह नैतिक है।

ऊपर और नीचे। आत्मा और शरीर। सत्य और असत्य।

मृत्यु और जीवन। यूहन्ना 3:19 से 21. यही न्याय है।

प्रकाश संसार में आ चुका है, और लोग प्रकाश के बजाय अंधकार को पसंद करते हैं क्योंकि उनके काम बुरे हैं। यहाँ प्रकाश और अंधकार के बीच एक नैतिक द्वैतवाद है। यहाँ 1:9 की प्रतिध्वनि है, और अवतार की बात करता है।

यीशु, जो प्रकाश है, संसार में आया है। लोग अंधकार से प्रेम करते हैं। वे पाप से प्रेम करते हैं, और वे प्रकाश के बजाय अज्ञानता से प्रेम करते हैं क्योंकि उनके कार्य बुरे थे।

वे उजागर नहीं होना चाहते। जो कोई दुष्ट काम करता है, वह ज्योति से घृणा करता है और ज्योति में नहीं आता, ऐसा न हो कि उसका काम उजागर हो जाए। परन्तु जो कोई सच्चाई पर चलता है, वह ज्योति में आता है, ताकि यह स्पष्ट रूप से देखा जा सके कि उसके काम परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।

यह एक नैतिक द्वैतवाद है। शाश्वत प्रकाश दुनिया में आता है और मनुष्यों पर चमकता है, उनके पाप को उजागर करता है, और जो लोग दोषी हैं और पश्चाताप करते हैं और विश्वास करते हैं वे बचाए जाते हैं। जो लोग प्रकाश से घृणा करते हैं और प्रकाश से दूर हो जाते हैं वे खो जाते हैं।

3:31. जो ऊपर से आता है, वह सब से ऊपर है। जो पृथ्वी से है, वह पृथ्वी का है और पृथ्वी की बातें बोलता है।

जॉन द बैपटिस्ट खुद और मसीह के बीच अंतर कर रहा है। यह जॉन द बैपटिस्ट की गलती नहीं है कि दूसरी सदी की शुरुआत में यह जॉन द बैपटिस्ट का पंथ था। जॉन और क्या कर सकता था? वह कहता है, मैं मसीह नहीं हूँ।

इससे ठीक पहले, मुझे उसके आगे भेजा गया है। मैं बस दूल्हा हूँ, दूल्हे का दोस्त। परमेश्वर के लोग दुल्हन हैं।

यीशु दूल्हा है। मैं सिर्फ सबसे अच्छा इंसान हूँ। मैं सिर्फ एक दोस्त हूँ।

हे भगवान। और वह कहता है कि जो ऊपर से आता है वह ईश्वर का पुत्र है जो स्वर्ग से आता है; वह सब से ऊपर है। वह मुझसे इतना ऊपर है कि मैं सबसे निचले घर के दास की भूमिका निभाने के योग्य नहीं हूँ।

मैं तो उसकी चप्पल भी नहीं खोल सकता। धरती से कौन है? मैं हूँ। मैं तो एक साधारण इंसान हूँ, जॉन कह रहा है।

धरती से संबंधित है और सांसारिक तरीके से बोलता है। यीशु धरती पर स्वर्गीय तरीके से बोलता है। फिर से, एक नैतिक द्वैतवाद।

5:24. जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है। उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

दूसरे शब्दों में कहें तो, वह आध्यात्मिक रूप से पुनर्जीवित हो गया है। दूसरे शब्दों में कहें तो, उसका दोबारा जन्म हुआ है। उसका पुनर्जन्म हुआ है।

मृत्यु और जीवन के बीच द्वैतवाद। 15, 2. मैं सच्ची दाखलता हूँ। मेरे पिता दाख की बारी के मालिक हैं।

मेरे अन्दर जो भी शाखा फल नहीं देती, उसे वह काट देता है। वह हर उस शाखा को काटता है जो फल देती है ताकि वह और अधिक फल दे सके। रूपक के अनुसार, जैसे-जैसे यह आगे बढ़ता है, काटना न्याय की बात करता है।

उन्हें इकट्ठा किया जाता है और आग में जला दिया जाता है। यह उन लोगों की बात करता है जो खो गए हैं। एक मिनट रुको, एक मिनट रुको।

क्या मुझमें हर शाखा मसीह के साथ एकता की बात नहीं करती? नहीं, अभी नहीं। यह अंश मसीह के साथ एकता की बात करता है, लेकिन उस विशेष भाषा का मतलब बस इतना है कि दोनों शाखाएँ, अगर आप चाहें, मसीह के साथ पहचानी जाती हैं, और फल-फूलना यह दर्शाता है कि वास्तव में कौन सच्चा शिष्य है। यही वह यहाँ कहता है।

अगर मैं सही अध्याय में आ जाऊँ तो यह सही होगा। हे भगवान। मैं बेल हूँ, तुम शाखाएँ हो।

जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत सा फल खो देता है। यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाई फेंक दिया जाता है, और सूख जाता है। डालियाँ इकट्ठी करके आग में डाल दी जाती हैं, और जला दी जाती हैं।

आह, श्लोक 8. इस से मेरे पिता की महिमा होती है कि तुम बहुत फल लाओ और इस प्रकार मेरे शिष्य साबित हो। फल लाना शिष्यत्व को दर्शाता है। कोई फल नहीं, कोई अनन्त जीवन नहीं।

यह सिर्फ इसी अनुच्छेद में नहीं है। यह एक सुसंगत बाइबल सिद्धांत है। बेशक, फल की डिग्री।

मत्ती के सुसमाचार में मत्ती 13 में मिट्टी का दृष्टांत है। जी हाँ, मत्ती 13। अच्छी मिट्टी फल पैदा करती है।

30 गुना, 60 गुना, 100 गुना। मुझे अपने गुना के बारे में पक्का पता नहीं है, लेकिन तीन हैं, फल-असर की तीन अलग-अलग डिग्री हैं। अन्य तीन प्रकार की मिट्टी द्वारा इंगित किए गए असंरक्षित मनुष्यों के पास कोई फल नहीं है और कोई स्थायी फल नहीं है।

फल नहीं तो अनन्त जीवन नहीं। फल, अनन्त जीवन। फिर, उस क्षेत्र में डिग्री होती है।

किसी भी मामले में, यहाँ द्वैतवाद है। फल देने वाली शाखा और वह शाखा जो फल नहीं देती। अतिशयोक्ति जॉन की शैली की अंतिम विशेषता है।

यह एक पवित्र अतिशयोक्ति है। हमने इसे अध्याय एक की आयत 17 में देखा। व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई थी, और अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा आई।

यदि आप समझते हैं कि अनुग्रह और सत्य पुराने नियम की जोड़ी, संयोजन या दोहे हैं, तो आप समझ सकते हैं कि यह कानून और अनुग्रह और सत्य के बीच एक बिल्कुल सीधी तुलना नहीं है, बल्कि यह पुराने नियम में प्रकट अनुग्रह और सत्य की तुलना में एक अतिशयोक्तिपूर्ण कथन है, जो पुराने नियम में है। यह पुराने नियम की अभिव्यक्ति है। निर्गमन 34, भजन 117, और कई अन्य स्थानों पर इसकी तुलना यीशु में प्रकट अनुग्रह और सत्य से की गई है।

पुराने नियम का अनुग्रह और सत्य मात्र हैं, मात्र प्रतीत होते हैं, और तुलना करने पर पुराना नियम मात्र विधिक प्रतीत होता है। यह अतिशयोक्ति है। 3:17.

दूसरे शब्दों में, जॉन एक महान लेखक हैं। यह ऐतिहासिक सत्य और तथ्यों पर आधारित एक शानदार साहित्यिक रचना है और महान धर्मशास्त्र सिखाती है। परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में इसलिए नहीं भेजा कि वह संसार को दोषी ठहराए, जैसा कि जॉन के श्लोक 3:17 में कहा गया है, बल्कि इसलिए कि संसार उसके द्वारा उद्धार पाए।

बेटे के आने का उद्देश्य दण्ड लाना नहीं था। उसका उद्देश्य उद्धार लाना था। हालाँकि, वह दण्ड लेकर आया।

यह मिशनरियों के ऐसे क्षेत्र में जाने जैसा है जहाँ सुसमाचार नहीं पहुँचा है। उनका लक्ष्य क्या है? उद्धार लाना। क्या वे निंदा भी लाते हैं? हाँ।

क्या वे न्याय भी लाते हैं? हाँ। क्या यह उनका लक्ष्य है? नहीं। यह उद्धार लाने का एक उपोत्पाद है।

और इसलिए, यीशु अध्याय 15 में कह सकते थे, अगर मैंने वो काम नहीं किए होते जो किसी ने नहीं किए, तो तुम पाप के दोषी नहीं होते। यह यही है, 15:22, और 24. यह कोई पूर्ण कथन नहीं है।

अगर मैं उनके पास न आता और उनसे बात न करता, तो वे पाप के दोषी नहीं होते। हाँ, वे होते। यह कोई निरपेक्ष बात नहीं है।

वे थे। यीशु मूल पाप से इनकार नहीं कर रहे हैं। इसका अर्थ यह है।

मुझे दोनों भाग समझ लेने दो, 24. अगर मैंने उनके बीच वो काम न किया होता जो किसी और ने नहीं किया, तो वे पाप के दोषी नहीं होते। यहाँ बताया गया है कि आप इन अतिशयोक्ति को कैसे चुनते हैं।

ये शब्द अक्षरशः सत्य नहीं हैं। इसका अर्थ यह है। बेशक, मनुष्य ही दोषी थे।

इसीलिए यीशु उन्हें बचाने के लिए दुनिया में आए। लेकिन परमेश्वर के पुत्र, परमेश्वर के महान प्रकटकर्ता, महान जीवनदाता की उपस्थिति में आने से पहले उनका अपराध, उनका अपराध, उनका पिछला अपराध, उसे अस्वीकार करने के बाद उनके अपराध की तुलना में, उनका पिछला अपराध कोई अपराध नहीं है। यहाँ बताया गया है कि यह कैसे है, यहाँ बताया गया है कि मत्ती इसे कैसे कहेगा, मत्ती में यीशु इसे कैसे कहेगा।

हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय। लेकिन यूहन्ना इसे इस अतिशयोक्ति के साथ कहता है। ऐसा लगता है कि यीशु मूल पाप को नकार रहे हैं।

यही बात हमें बताती है कि यह शाब्दिक नहीं है। यह रूपकात्मक है। यह निरपेक्ष रूप से दिया गया एक अतिशयोक्तिपूर्ण कथन है, लेकिन वास्तव में यह एक तुलना है।

परमेश्वर के पुत्र को उसके वचनों और चिह्नों में अस्वीकार करने के आपके अपराध की तुलना में, आपका पिछला अपराध, जो काफी था, नगण्य है। दूसरे शब्दों में, आपका अब का अपराध स्वर्ग तक है। 9:39, यह सब, या इसका अधिकांश भाग, पाठक को जकड़ने और उन्हें जाने न देने के लिए है।

हाँ, मैं समझता हूँ, एक बच्चा पढ़ रहा है, पहला वाचन, आपको यह सब समझ में नहीं आने वाला है। लेकिन जैसे-जैसे आप गहराई से पढ़ते हैं, वाह, अब मुझे 3:17 समझ में आता है। 3:17 में कहा गया है कि वह न्याय करने नहीं आया था।

मुझे इसे 939 के साथ पढ़ना होगा, जहाँ वह कहता है कि वह न्याय करने आया था। न्याय के लिए, मैं दुनिया में आया। यह कौन सा है? यह दोनों है।

और आपको स्पष्ट विरोधाभास देखना चाहिए। बेटा दुनिया को दोषी ठहराने के लिए नहीं बल्कि दुनिया को बचाने के लिए दुनिया में आया था। पिता ने बेटे को दुनिया को दोषी ठहराने के लिए नहीं बल्कि उसके ज़रिए दुनिया को बचाने के लिए भेजा था।

यहाँ, 939, न्याय के लिए, मैं दुनिया में आया, ताकि जो नहीं देखते वे देख सकें, और जो देखते हैं वे अंधे हो जाएँ। आह, जॉन का भाषण कुछ मायनों में इतना हाथी जैसा है, अगर मैं उस तरह से बात कर सकता हूँ, तो यह बहुत उल्लेखनीय है। यीशु का लक्ष्य बचाना था, न कि मिशनरी की तरह निंदा करना।

वे निंदा लाते हैं, लेकिन यह उनका उद्देश्य नहीं है। अगर मिशनरी न होते तो लोग बेहतर होते अगर वे मिशनरी के संदेश को अस्वीकार कर देते क्योंकि अब उनका न्याय अधिक है। हमेशा के लिए नरक में रहने से बड़ा क्या हो सकता है? हमेशा के लिए नरक में रहना नरक में सजा की डिग्री के अनुरूप है।

हे कफरनहूम, हाय तुझ पर! हे गलीली के दूसरे नगर, हाय तुझ पर! जो आश्चर्यकर्म तुम में किए गए, यदि वे सदोम और अमोरा में किए जाते, तो वे मन फिराते।

कफरनहूम और बेथसैदा का न्याय सदोम और अमोरा के न्याय से भी बदतर है। क्यों? अधिक प्रकाश अधिक जिम्मेदारी लाता है। अधिक जिम्मेदारी, अस्वीकार, असफल, अधिक न्याय लाता है।

नरक में सज़ा के कई स्तर हैं। रोमियों 2, अपने हठीले दिलों से, तुम परमेश्वर के न्याय के प्रकट होने के दिन अपने न्याय को बढ़ा रहे हो, बढ़ा रहे हो, तुम अपने न्याय को बढ़ा रहे हो। न्याय को संचित करना भाषा है।

9:39, यीशु न्याय लाने के लिए आया था, मुख्य रूप से नहीं, लेकिन उद्धार लाने के लिए उसके आने का एक उपोत्पाद यह है कि वह न्याय लाता है। 531 और 814 एक साथ चलते हैं। यह एक सतही विरोधाभास है।

5:31, अगर मैं अकेला गवाही देता हूँ, तो मुझे लगता है कि ESV ने वहाँ एक शब्द जोड़ा है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह समस्या का उचित अर्थ और समाधान नहीं है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह कहता है कि अगर मैं अकेला हूँ। जॉन 5:31 कहता है, हाँ, वहाँ कोई अकेला नहीं है।

अगर मैं अपने बारे में गवाही देता हूँ, तो मेरी गवाही सच नहीं है। ESV ने इस समस्या का समाधान कर दिया है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह गलत है।

बाइबल का अनुवाद करने के लिए आपको बाइबल या किसी अन्य दस्तावेज़ की व्याख्या करनी होगी। अगर मैं अपने बारे में गवाही देता हूँ, तो मेरी गवाही सच नहीं है। अध्याय 8, 8:14 में, वह कहता है कि अगर वह अपने बारे में गवाही देता है, तो उसकी गवाही सच है।

एक मिनट रुकिए। यह एक विरोधाभास है। यह एक सतही विरोधाभास है, और हम इसे स्वीकार करते हैं।

अगर मैं अपने बारे में गवाही भी देता हूँ, तो भी मेरी गवाही सच है। क्या हो रहा है? ESV का प्रोत्साहन सही है। हालाँकि, किसी समिति के निर्णयों का न्याय करना मेरा अधिकार नहीं है।

मैं आपको एक मज़ेदार कहानी सुनाता हूँ। मैं कई साल पहले बाइबल का अनुवाद और अध्ययन करने वाले लोगों को जानता था, और वे दस आज्ञाओं के साथ काम कर रहे थे, और वे स्पष्ट रूप से समझते थे कि तुम हत्या नहीं करोगे का मतलब है कि तुम हत्या नहीं करोगे। ठीक है।

इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन समिति कुछ हद तक आंदोलन कर रही थी, उन्होंने कहा, हम दस आज्ञाओं को नहीं बदल सकते। मुझे नहीं पता कि उन्होंने कोई नोट लिखा या कुछ और, लेकिन वे भगवान के दस पवित्र शब्दों को बदलने में बहुत हिचकिचा रहे थे। और मैं उस प्रेरणा का भी सम्मान करता हूँ।

लेकिन किसी भी मामले में, हमें इन विरोधाभासों पर ध्यान देना चाहिए, है न? और फिर हमें आगे की जांच करनी चाहिए। आप कहते हैं कि जॉन की यही रणनीति है कि हम ठीक से सोचें। यह एक रणनीति है।

और 5:31 में, ESV ने समस्या का समाधान कर दिया है। मुझे यकीन नहीं है कि उन्हें बाइबिल के पाठ में ऐसा करना चाहिए। लेकिन वैसे भी, अगर मैं, उह, मैं अपने आप कुछ नहीं कर सकता, तो श्लोक 30, जैसा कि मैंने सुना है, मैं न्याय करता हूँ।

और मेरा निर्णय उचित है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, बल्कि अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूँ। अगर मैं अपने बारे में गवाही देता हूँ, तो मेरी गवाही सत्य नहीं है। इसका अर्थ ठीक वैसा ही है जैसा वे कहते हैं: अगर मैं अपने बारे में पिता की गवाही के विपरीत गवाही देता हूँ, अगर मैं दूसरे गवाहों के साथ सामंजस्य बिठाए बिना खुद के बारे में गवाही देता हूँ, क्योंकि सबसे पहले नर्स कहती है कि उसके बाद कोई और है जो मेरे बारे में गवाही देता है।

और मैं जानता हूँ कि मेरे बारे में उसने जो गवाही दी है वह सच है। वह जो कर रहा है वह कानूनी, कानून की गवाही, उस सिद्धांत की अपील कर रहा है जिसके अनुसार किसी मामले को वैध बनाने के लिए कम से कम दो गवाहों की आवश्यकता होती है ताकि कोई निर्णय वैध हो सके। और वह खुद से अपील कर रहा है।

इसलिए, अगर मैं सिर्फ अपने बारे में गवाही देता हूँ और पिता का खंडन करता हूँ, तो मेरी गवाही झूठी है, लेकिन वह यह नहीं कह रहा है कि उसकी गवाही झूठी है। यह उस संदर्भ में है। वैसे भी, जॉन की शैली कमाल की है।

यह हमें अपनी ओर खींचता है। यह हमें अपने अंदर रखता है। यह हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि यह बहुत बढ़िया सौदा है।

और हमारे अगले व्याख्यान में, हम यूहन्ना के सुसमाचार की संरचना पर विचार करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा जोहानिन धर्मशास्त्र पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 3, जोहानिन शैली, भाग 2 है।